अर्घप्रकाश

ज्योतिष



खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन बम्बई

॥ श्रीः ॥

अर्घप्रकाशज्योतिष

पं. श्रीरविदत्तजीकृत,

हिन्दीटीकासमेत

जिसमें

तिथि वार नक्षत्रोंका शुभाशुभ फल और महर्घसमर्घका विचार
विस्तारपूर्वक वर्णित है.

मुद्रक व प्रकाशक :

खेमराज श्रीकृष्णदास

अध्यक्ष:-"श्रीवेङ्कटेश्वर" प्रेस

बंबई

संस्करण : फरवरी २००८, सम्वत् २०६४

मूल्य १५ रुपये मात्र।

मुद्रक एवं प्रकाशक:
खेमराज श्रीकृष्णदास,™
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
मुंबई - ४०० ००४.

Printers & Publishers
Khemraj Shrikrishnadass
Prop: Shri Venkateshwar Press
Khemraj Shrikrishnadass Marg,
7th Khetwadi, Mumbai - 400 004.

Web Site : http://www.khe-shri.com
E-mail : khemraj@vsnl.com

Printed by Sanjay Bajaj for M/s Khemraj Shrikrishnadass
Prop. Shri Venkateshwar Press, Mumbai-400004,
at their Shri Venkateshwar Press, 66 Hadapsar Industrial Estat
Pune -411 013.

॥ श्रीः ॥

अथार्घप्रकाशज्योतिष

हिन्दीटीकासमेत

श्रीगणेशायनमः ॥ ॥ श्रीमद्देवीपदद्वंद्वंप्रत्यूहव्यूहनाशनम् ॥ तत्समाभि-नतिर्यस्य वितरत्युत्तमांमतिम् ॥ १ ॥ अथातः संप्रवक्ष्यामिसारंचा-र्घप्रकाशकम् ॥ मथितंसर्वग्रंथानांदधिमध्येघृतं यथा ॥ २ ॥ तिथि-वारंप्रवक्ष्यामिऋक्षाणांसप्तविंशतिम् ॥ अन्यान्क्रूरान्ग्रहान्वक्ष्येयैर्भावो-लक्ष्यतेध्रुवम् ॥ ३ ॥

अर्थ – विघ्नोंके समूहोंका नाश करनेवाले शोभायुक्त श्रीदेवीके चरणोंको मैं वारंवार नमस्कार करता हूं क्योंकि जिस देवीके अर्थ नमस्कार करने से उत्तम बुद्धि होती है ॥१॥ अब जैसे दही में से साररूप घृत मथा जाता है तैसे सब ग्रंथों-में से मथा हुआ साररूप 'अर्घप्रकाश' नामवाले ग्रंथको कहेंगे ॥२॥ इस ग्रन्थ में तिथि वार सत्ताईस नक्षत्र इनके शुभाशुभ फल और जिन ग्रहोंसे महँगा सस्ता भाव मालूम हो सक्ता है उनका फल कहेंगे ॥ ३ ॥

अथाश्विन्यादिनक्षत्रगतशनिफलमाह—अश्विन्यांचगतः सौरि-स्तिलतैलंचपित्तलम् ।

महर्घं मासमेकं च पुनः शस्तोऽपि जायते ॥ ४ ॥

अर्थ – अश्विनी आदि नक्षत्रपै प्राप्त हुए शनैश्चरका फल—जब अश्विनी नक्षत्रपै शनैश्चर प्राप्त होवे तब तिल तैल पीतल ये एक महीनातक महँगे होवें फिर सस्ते हो जावें ॥ ४ ॥

भरण्यांचैवऋक्षेतुरविपुत्रोहिसंस्थितः ।

भ्रातृणांप्राग्भवेद्युद्धंराज्ञांचैवमहद्भयम् ॥ ५ ॥

अर्थ – भरणी नक्षत्रपै शनैश्चर होवे तब पूर्व दिशामें आपसमें भाइयों का युद्ध होवे और राजाओंको अत्यंत भय होवे ॥ ५ ॥

कृत्तिकांचगतः सौरिरशेषाणिधनानिच ।
सुभिक्षंजायतेतत्र काष्ठेलाभश्चतुर्गुणः ॥ ६ ॥

अर्थ – जब कृत्तिका नक्षत्रपै शनैश्चर होवे तब रुपया सोना आदि सब धन मँहिगे होवें और अन्न सस्ता होवे और काष्ठके खरीदनेमें चौगुना लाभ होवे ॥ ६ ॥

अश्विन्यांचभरण्यांचकृत्तिकायांतथैवच ॥
भूमिपुत्रोयदाचासीत्सौख्यं चैवविनिर्दिशेत् ॥ ७ ॥

अर्थ – अश्विनी भरणी कृत्तिका इन नक्षत्रोंपै मंगल होवे तब संसार में सबके सुख आनन्द होवे ॥ ७ ॥

रोहिणीमृगशीर्षेचसूर्यपुत्रोयदाभवेत् ।
कुंजराः प्रलयं यांति सर्ववस्त्रमहर्घता ॥ ८ ॥

अर्थ – रोहिणी मृगशिर इनपै शनैश्चर होवे तब हस्तियोंका नाश होता है और सब प्रकारके वस्त्र मँहिगे होते हैं ॥ ८ ॥

आर्द्रायांचयदासौरिःसर्वधान्यस्यसंग्रहः ।
द्वितीयेतृतीयेमासेद्विगुणंलाभमादिशेत् ॥ ९ ॥

अर्थ – आर्द्रानक्षत्रपै शनि होवे तब सब धान्योंका संग्रह करना चाहिये धान्य संग्रह करनेवालेको दूसरे तीसरे महीनेमें दूना लाभ होता है ॥ ९ ॥

आदित्यश्चतथाभौमआर्द्रायांचगतावुभौ ।
महर्घमेकमासेनपुनः शस्तोऽभिजायते ॥ १० ॥

अर्थ – सूर्य मंगल ये दोनों आर्द्रानक्षत्रपै होवें तब एक महीना तक मँहिगा भाव रहै फिर अन्न आदि सस्ते हो जावें ॥ १० ॥

पुष्येपुनर्वसौचैवयदिसौरिः प्रजायते ।
सस्येसुखंचदुखंचतेनकालः प्रवर्तते ॥ ११ ॥

अर्थ – पुष्यनक्षत्रपै शनि होवे तब खेतियोंमें अन्न वृद्धि होके संसारको सुख उत्पन्न होवे और पुनर्वसुपै आवे तब संसारको दुःख होवे काल परे ॥ ११ ॥

आश्लेषायांयदासौरिस्तदावृष्टिर्नवार्यते ।
धनुषः सारखड्गस्यनूनंचैवमहर्घता ॥ १२ ॥

अर्थ – जब आश्लेषा नक्षत्रपै शनि होवे तब वर्षा नहीं होवे और धनुष उत्तम खड्ग ये मँहिगे होवें अर्थात् युद्ध होवे ॥ १२ ॥

मघायांचयदासौरिः समयंदीयते तदा ।
कुंजरंहयवाणिज्यंलाभंचैवविनिर्दिशेत् ।। १३ ।।

अर्थ – मघा नक्षत्रपै शनि होवे तब संसारमें भय होवे और हस्ती घोडे इनका व्यापार करनेमें चौगुना लाभ होवे ।। १३ ।।

आदित्यादिग्रहाः पंचसौरिसंगे यदास्थिताः ।
सर्वधान्यमहर्घंचनात्रकार्याविचारणा ।। १४ ।।

अर्थ – सूर्यसे आदिले पांच ग्रह सूर्य चन्द्रमा मंगल बुध बृहस्पति ये शनैश्चरके संग होवें तब सब धान्य महँगे होवें इसमें संदेह नहीं ।। १४ ।।

यदामार्तण्डतनयः पूर्वाफाल्गुनिसंस्थितः ।
चिंतावस्थाद्विजाः सर्वेपृथिव्यांदारुणंभयम् ।। १५ ।।

अर्थ – जब शनैश्चर पूर्वाफाल्गुनीपै होवे तब सब ब्राह्मण चिंतासे युक्त होवें और पृथ्वीपै दारुण भय होवे ।। १५ ।।

हस्तेजीवस्तथाराहुः शनिर्वापिभवेद्यदा ।
नृपश्चदुःखितोऽनाथो जायते नात्रसंशयः ।। १६ ।।

अर्थ – हस्तनक्षत्रपै बृहस्पति राहु शनैश्चर ये ग्रह होवें तब राजाको पीडा होवे दुःख होवे गरीब होवे इस्में संदेह नहीं ।। १६ ।।

चित्रायांचयदासौरिः पश्यताचयदा भवेत् ।
महर्घंजायतेनित्यंलाभश्चैवचतुर्गुणः ।। १७ ।।

अर्थ – जब चित्रा नक्षत्रपै शनि होवे और शनि दीखता हो अस्त न हुआ हो तो अन्न आदि सब वस्तु मँहिगे होवें तिनमें चौगुना लाभ होवे ।। १७ ।।

स्वात्यांविशाखात्रृक्षेचयदासौरिः प्रगच्छति ।
ज्वलंतितत्रभूपालानास्तिकिंचिद्विचारणा ।। १८ ।।

अर्थ – स्वाती विशाखा इन नक्षत्रोंपै शनि आवे सब राजाओंको दुःख होवे इसमें कछु विचार नहीं करना ।। १८ ।।

स्वात्यांसौरिर्यदाभौमोरेवतींचगतोरविः ।
चालितास्तत्रभूपालानात्रकार्याविचारणा ।। १९ ।।

अर्थ – स्वाती नक्षत्रपै शनि और मंगल होवे सूर्य रेवती नक्षत्रपै होवे तब राजे चलायमान होवें इसमें कछु विचार नहीं करना ।। १९ ।।

अनुराधांगतः सौरिर्ज्येष्ठायांपरिवर्तते ।
पश्चिमेदारुणोघोरः संहारस्तत्रजायते ।। २० ।।

अर्थ – अनुराधा नक्षत्रै वा ज्येष्ठा नक्षत्रपै शनि होवे तव पश्चिम दिशामें दारुण घोर संहार होवे ।। २० ।।

मूलेसौरिर्बुधः स्वातीवार्द्रायांचैवसंस्थितः ।
संग्रहेसर्वधान्यानामग्रेलाभश्चदीयते ।। २१ ।।

अर्थ – मूलनक्षत्रपै शनि होवे और स्वातीपै तथा आर्द्रापै बुध होवे तव सब धान्योंका संग्रह करना चाहिये आगे चौगुना लाभ होता है ।। २१ ।।

यदामार्तण्डतनयः पूर्वाषाढेऽपिजायते ।
लोकानांचैवसर्वेषांकाष्ठेलाभश्चतुर्गुणः ।। २२ ।।

अर्थ – जब पूर्वाषाढापै शनि होवे तव सब लोकोंको काष्ठके खरीदनेमें चौगुना लाभ होता है ।। २२ ।।

उत्तराषाढकेसौरिः सप्तमासेहिभास्करः ।
पानीयस्यलयंकुर्याद्वार्हीनाचमहीभवेत् ।। २३ ।।

अर्थ – जब उत्तराषाढापै शनि होवे तव सात महीनोंतक सूर्य जलका नाश कर देवे और पृथ्वी वर्षाके जलसे रहित हो जावे ।। २३ ।।

यदाश्रवणऋक्षेतुकोपिक्रूरोभविष्यति ।
तत्रचान्नंमहर्घंचगोधूमस्यविशेषतः ।। २४ ।।

अर्थ – जब श्रवण नक्षत्रपै कोई भी क्रूर ग्रह आ जावे तव अन्न महँगे होवें और गेहूं विशेष महँगे होवें ।। २४ ।।

यदाऋक्षधनिष्ठायांसूर्यपुत्रोपिजायते ।
सर्वधान्यंमहर्घंचवृष्टिस्तत्र भविष्यति ।। २५ ।।

अर्थ – धनिष्ठा नक्षत्रपै शनि होवे तब सब धान्य महँगे होवें और वर्षा भी होवे ।। २५ ।।

मंगलःसौरिशुक्रौचधनिष्ठायांस्थितायदि ।
गर्जिताश्चनवर्षन्तितोयंबिंदुंपयोधराः ।। २६ ।।

अर्थ – मंगल शनि शुक्र ये धनिष्ठा नक्षत्रपै होवें तब गर्जते हुये भी मेघ बूंदमात्र जलको नहीं वर्षें ।। २६ ।।

शतभिषांचयदाजीवश्चित्राथांचभवेत्कुजः ।
महर्घंचान्नगोधूमाः पूर्वादीनांचतुर्दशम् ।। २७ ।।

अर्थ – शतभिषापै बृहस्पति होवे और चित्रापै मंगल होवे तब पूर्व आदि चारों दिशाओंमें गेहूं मंहिगे होवें ।। २७ ।।

पूर्वाभाद्रपदाऋक्षेयदासौरिश्चसंस्थितः ।
मेघश्चवर्षंतेतत्रलोकानांचहितायवै ।। २८ ।।

अर्थ – पूर्वाभाद्रपदा नक्षत्रपै शनि होवे तब संसारके हितके वास्ते मेघ वर्षें ।। २८ ।।

उत्तराभाद्रपदाऋक्षेरेवत्यांचतथैवच ।
राज्ञोभयंभृतानांचलोकानांव्याधिपीडनम् ।। २९ ।।

अर्थ – उत्तराभाद्रपदा तथा रेवतीपै शनि होवे तब मनुष्योंको राजासे भय होवे और लोगोंमें बीमारी होवें ।। २९ ।।

इति शनिचार

अथमेषराशिगतग्रहफलम्

अन्यंचाहंप्रवक्ष्यामिग्रहचारसमुच्चयम् ।
क्रूरेषुसौम्यकर्मसुराशिराशिफलंतदा ।। १ ।।

अर्थ – अब मेषराशिपै आनेवाले ग्रहोंका फल कहते हैं, अब अन्य ग्रहचारके समूहको कहते हैं और जो क्रूर ग्रह हैं उनका तथा सौम्य कर्मवाले ग्रहोंके फलको कहैंगे ।।१।।

यदाभानुःस्थितोमेषेफलानितुलभादिकम् ।
इक्ष्वादितिलतैलादितदाचैवमहर्घता ।। २ ।।

अर्थ – जब मेषराशिपै सूर्य होवै तब फल और रुई ईख तिल तेल इत्यादिक सब वस्तु मंहिगी होवें ।। २ ।।

यदाभौमभृगूचैवशनिक्षेत्रेभविष्यतः ।।
निशापतिःस्थितस्तत्रनकिञ्चिच्चशुभं भवेत् ।। ३ ।।

अर्थ – जब मंगल शुक्र ये शनिके क्षेत्रमें होवें तहां चंद्रमा भी आ जावे तब संसारमें सब अशुभ फल होवे ।। ३ ।।

भूमिपुत्रोयदामेषेसुभिक्षंसर्वधान्यकम् ।
प्रवालानिमहर्घाणिक्रोधवांस्तुभवेन्नृपः ।। ४ ।।

अर्थ – जब मंगल मेषका होवे तब सब धान्य सस्ते होवें और मूंगे महिंगे होवें राजाओंमें क्रोध उत्पन्न होवे ।। ४ ।।

बुधोवृश्चिकमेषेचमहर्घंचचतुष्पदाम् ।
सुवर्णंसमतांयातिनात्रकार्याविचारणा ।। ५ ।।

अर्थ – वृश्चिक और मेषराशिपै बुध होवे तव चौपाये (पशु) महिंगे होवें और सोनाका समान भाव रहे इसमें सन्देह नहीं ।। ५ ।।

यदासुरगुरुर्मेषेसुखंसर्वजनेषुच ।
सुभिक्षंक्षेममारोग्यंसुखिनीमेदिनीभवेत् ।। ६ ।।

अर्थ – जब बृहस्पति मेषका होवे तब सब मनुष्योंमें सुख रहै और सुभिक्ष होवे क्षेम कुशल होवे पृथ्वीपै सुखकी वृद्धि होवे ।। ६ ।।

दैत्यगुर्यदामेषेसर्वधान्यमहर्घता ।
महिषीपशुपीडाचमेघवर्षाभविष्यति ।। ७ ।।

अर्थ – जब शुक्र मेषका होवे तब महिषी आदि पशुओंको पीडा होवे और सब धान्य महिंगे होवें पीछे वर्षा भी होवे ।। ७ ।।

यदासौरिर्भवेन्मेषेकांचनंरूप्यताम्रकम् ।
मौक्तिकंपद्मरागंचमहर्घंतुभवेत्तदा ।। ८ ।।

अर्थ – जब शनैश्चर मेषका होवे तब सोना चांदी तांबा ये महिंगे होते है और मोती पुखराज ये रत्न भी महिंगे होते हैं ।। ८ ।।

राहुश्चक्रूरसंगेषुयदामेषे भविष्यति ।
दुर्भिक्षं च भवेत्तत्रनात्रकार्याविचारणा ।। ९ ।।

इति मेषराशिग्रहचारः

अर्थ – जब राहु मेषराशिपै आवे और क्रूर ग्रहोंके साथ हो जावे तब दुर्भिक्ष होवे इसमें कछु विचार नहीं करना ।। ९ ।।

।। इतिमेषग्रहचारफल ।।

वृषराशौयदाभौमः सर्वंधान्यमहर्घता ।
चंदनंकुंकुमंवस्त्रंकार्पासादिमहर्घता ।। १० ।।

अर्थ – जब वृषराशिपै मंगल होवे तब सब धान्य महँगे होवें और चन्दन कुंकुम वस्त्र कपास आदि ये सब महँगे होते हैं ।। १० ।।

सोमपुत्रोवृषेस्थित्वाह्येवंकुर्याच्चलक्षणम् ।
मेदिनीनवखंडेषुकलहश्चमहद्भयम् ।। ११ ।।

अर्थ – बुध वृषराशिपै आवे तब संपूर्ण पृथ्वीपै कलह युद्ध होवे और अत्यन्त भय होवे ।। ११ ।।

यदाजीवोवृषेयातिसुभिक्षंसर्वसौख्यदम् ।
गोरसाज्यंमहर्घाणिसस्यंचप्रचुरं भवेत् ।। १२ ।।

अर्थ – जब वृषका बृहस्पति होवे तब दूध घृत आदि महँगे होवें और खेतियां बहुतसी निपजें ।। १२ ।।

वृषेसौरिर्यदायातिविनश्यन्तिचतुष्पदाः ।
सप्तधान्यंमहर्घंचनृपाणांविग्रहोभवेत् ।। १३ ।।

अर्थ – जब वृषराशिपै शनि आवे तब सातों धान्य महँगे होवें और राजाओं का आपसमें युद्ध होवे ।। १३ ।।

वृषेराहुस्तथाभौमःषष्ठेमासिचचान्तके ।
दुर्लभानिचधान्यानिनात्रकार्याविचारणा ।। १४ ।।

इतिवृषराशिग्रहचारफलम्

अर्थ – वृषराशिपै राहु और मंगल ये दोनों आवें तब छठे महीनेमें सब धान्य मिलने दुर्लभ हो जावें इसमें कछु विचार नहीं करना ।। १४ ।।

इतिवृषराशिग्रहचारफलम्

मिथुनेभास्करोयातिकर्पासःकन्दमूलकम् ।
तिलाश्चसर्वधान्यं च महर्घंच भविष्यति ।। १५ ।।

अर्थ – मिथुनराशिका सूर्य होवे तब कपास कंद मूल तिल और संपूर्ण धान्य ये महँगे होते हैं ।। १५ ।।

मिथुनेचैवकन्यायांनिशानाथेचसंस्थिते ।
वर्षासुतत्रजानीयाद्वर्षते नात्रसंशयः ॥१६॥

अर्थ – वर्षाऋतुमें मिथुनका तथा कन्याका चंद्रमा होवे तब अवश्य वर्षा होवे इसमें संदेह होवे नहीं ॥ १६ ॥

मिथुनेजायतेभानुःकन्यांराहुस्तथैवच ।
धान्यानियान्तिसर्वाणिसस्यानिचमहर्घताम् ॥१७॥

अर्थ – मिथुन राशिका सूर्य होवे और कन्याराशिपै राहु होवे तब सब धान्य महिंगे होवें और सब खेतियां महिंगी होवें ॥ १७ ॥

मिथुनेंगारकोजीवस्तुलाराशौयानैश्चरः ।
धनराशौयदाराहुर्मेघाश्चप्रबलाधिकाः ॥१८॥

अर्थ – मिथुनराशिका मंगल और बृहस्पति होवे तुलाराशि का शनैश्चर होवै धनराशिपै राहु होवे तब मेघ अत्यन्त प्रबल अधिक वर्षे ॥ १८ ॥

मिथुनेचैवकन्यायांयदाज्ञश्चभविष्यति ।
तदावायुर्विजानीयान्मेघश्चप्रचुरोभवेत् ॥१९॥

अर्थ – मिथुनराशि तथा कन्याराशिपै बुध होवेगा तब वायु भी चले और मेघभी अत्यन्त वर्षे ॥ १९ ॥

मिथुनेचगुरुर्यातितत्राब्देदारुणंभयम् ।
नृपाणांविग्रहस्तत्रस्वल्पंतोयंभविष्यति ॥२०॥

अर्थ – मिथुनराशिपै वृहस्पति होवे तिसवर्षमें दारुण भय होवे तब राजाओं का युद्ध होवे और थोडा जल वर्षे ॥ २० ॥

मिथुनेचयदासौरिर्दुर्भिक्षंतत्ररौरवम् ॥
पश्चिमेदारुणंयुद्धंनृपाणांचमहद्भयम् ॥२१॥

अर्थ – मिथुनराशिपै शनि होवे तब अत्यन्त भयानक दुर्भिक्ष होवे और पश्चिमदिशाके राजाओंके दारुण युद्ध होवे अत्यन्त भय होवे ॥ २१ ॥

राहुर्मिथुनराशिचेदेवंलक्षणमादिशेत् ।
घृतंचसर्वधान्यानिसमर्घजायतेतदा ॥२२॥

अर्थ – मिथुनराशिका राहु होवे तब भी ऐसाही युद्ध होवे और घृत, संपूर्ण धान्य ये सस्ते होते हैं ॥ २२ ॥

इतिमिथुनराशिकेग्रहचारकाफल

कर्कराशिस्थितोभानुःश्लेषायांतत्रवर्षति ।
धान्यानितत्रसर्वाणिक्वचित्क्वापिमहर्घता ॥२३॥

अर्थ – कर्कराशिपै सूर्य होवे तव आश्लेषा नक्षत्रके दिन वर्षा होवे तो कहीं कहीं सब धान्य महिंगे होवें ॥ २३ ॥

कर्कराशिगतेक्रूरेयदाभवतिचन्द्रमाः ।
महर्घाणिचधान्यानिभवंतिचदिनद्वयम् ॥२४॥

अर्थ – कर्कराशिपै क्रूर ग्रह होवे तव चन्द्रमा भी कर्कहाही होवे तो सब धान्य दो दिनतक महिंगे होवें ॥ २४ ॥

भूमिपुत्रोयदाकर्केसर्वधान्यमहर्घता ।
महिषीक्षुमहर्घंचजायतेनात्रसंशयः ॥२५॥

अर्थ – कर्कराशिका मंगल होवे तब सब धान्य महिंगे होवें और महिषी ईख ये महिंगे होवें इसमें संदेह नहीं ॥ २५ ॥

निशापतेश्चतनयःकर्कराशियदाभवेत् ।
ततोतिदुःखंसुखानिसुभिक्षंस्वल्पकारकम् ॥२६॥

अर्थ – कर्कराशिका बुध होवे तब प्रजाको अत्यन्त दुःख होवे और सुख थोडा होवे अल्प सुभिक्ष होवे ॥ २६ ॥

बृहस्पतिर्यदाकर्के स्वल्पमेघः प्रवर्षति ।
राजभिर्विग्रहश्चैवदुर्भिक्षंतत्रजायते ॥२७॥

अर्थ – कर्कराशिका बृहस्पति होवे तब थोडा मेघ वर्षे और राजाओंका आपसमें युद्ध होवे और दुर्भिक्ष होवे ॥ २७ ॥

सोमपुत्रोभृगुश्चैवचंद्रक्षेत्रेयदाभवेत् ।
दुर्भिक्षंतत्रकुर्वातिषण्मासांतेनसंशयः ॥२८॥

अर्थ – चन्द्रमाके क्षेत्रमें बुध और शुक्र होवें तब दुर्भिक्ष होवे और छः महीनों तक अन्न महिंगे होवें इसमें संदेह नहीं ॥ २८ ॥

यदाकर्कस्थितःसौरिर्मध्यदेशेभवेच्छुभम् ।
नागपूरंविनश्येत अन्यैर्दुर्भिक्षमुच्यते ॥२९॥

अर्थ – कर्कराशिपै शनि होवे तब मध्यदेशमें शुभफल होवे और नागपूरका नाश होवे और कई आचार्य कहते हैं कि उस देशमें दुर्भिक्ष होवे ।। २९ ।।

यदाकर्कस्थितोराहुस्तस्कराणांभयंभवेत् ।
समर्घं सर्वलोहंचमहर्घंषष्ठमासिकम् ।।३०।।

अर्थ – कर्क राशिपै राहु स्थित होवे तब चोरोंका भय होवे और सब प्रकारका लोहा सस्ता होवे फिर छठे महीनेमें महँगा हो जावे ।। ३० ।।

इति कर्कराशिग्रहचारफलम्

सिंहराशिगतेभानाविक्ष्वादिमिष्टशर्करा ।
रक्तानिसर्वभांडानितिलतैलमहर्घता ।।३१।।

अर्थ– सिंहराशिपै सूर्य होवे तब ईख आदि वस्तु खांड आदि मिष्टपदार्थ रक्तपदार्थ व रत्न तिल तेल ये सब महँगे होते हैं ।। ३१ ।।

यदासिंहगतोभौमःकांचनंरूप्यताम्रकम् ।
आरक्तसर्वद्रव्याणिमहर्घाणिभवंतिहि ।।३२।।

अर्थ – सिंह राशिपै मंगल होवे तब सोना रूपा ताँबा ये महँगे होवें और लालरंगके सब द्रव्यमहँगे होवें ।। ३२ ।।

सिंहराशिबुधोर्घहिधान्यार्घंचसमस्थितम् ।
शुक्तंचदेवदारुश्चमहर्घंजायतेतदा ।।३३।।

अर्थ – सिंह राशिका वुध होवे तब धान्य मूल्य सम रहै और दही काँजी इत्यादि खट्टे पदार्थ देवदारु औषध ये महँगे होवैं ।। ३३ ।।

यदासिंहेगुरुश्चैवसुभिक्षंत जायते ।
मेघाश्चप्रबलास्तत्रबहुसस्याचमेदिनी ।।३४।।

अर्थ – सिंहका बृहस्पति होवे तब सुभिक्ष होवे और मेघ अत्यन्त प्रबल होवें पृथ्वीपै बहुतसी खेतियां उत्पन्न होवे ।। ३४ ।।

यदादैत्यगुरुः सिंहेहेमरक्तचतुष्पदः ।
धान्यानिचमहर्घाणियावन्तिहिदिनानि च ।।३५।।

अर्थ – जब सिंहका शुक्र होवे तब सुवर्ण लाल रंगके चौपाये (पशु) सब प्रकारके धान्य ये सब महँगे रहते हैं जबतक सिंह राशिपै रहै तबतक महँगे रहैं ।। ३५ ।।

सिंहराशिगतः सौरिः समभावोऽन्नविष्यति ।
गुडतैलंमहर्घंच मालवोहिविनश्यति ।।३६।।

अर्थ – सिंहराशिका शनि होवे तब अन्नका समान भाव रहै और गुण तेल ये मँहिगे होवें मालवादेशका नाश होवे ।। ३६ ।।

यदासिंहगतेराहौभृंगबेरकटुत्रयम् ।
षष्ठेमासिव्यतीतेचलाभश्चैवचतुर्गुणः ।।३७।।

इतिसिंहराशिगतग्रहचारफलम्

अर्थ – सिंहका राहु होवे तब अदरक सूंठ मिरच पीपल इनके खरीदनेमें छः महीने पीछे चौगुना लाभ होता है ।। ३७ ।।

इतिसिंहराशिकेग्रहचारफल

कन्याराशिगतेभानौमंजिष्ठादिमहर्घता ।
नारिकेलंतिलंतैलंसर्वस्यचमहर्घता ।।३८।।

अर्थ – कन्याराशिका सूर्य होवे तब नारियल तिल तेल ये सब मँहिगे होते हैं ।। ३८ ।।

कन्याराशिगतेचंद्रेलोध्रमंजिष्ठराजिकम् ।
महर्घंषड्दिनांतेचह्योतद्भावमहर्घता ।।३९।।

अर्थ – कन्या राशिका चंद्रमा होवे तब छः दिनतक लोध्र मंजिष्ठ राई ये मँहिगे रहैं ।। ३९ ।।

कन्याराशिगतेभौमेचंदनंपट्टवस्त्रकम् ।
आरक्ताद्यर्घवस्त्राणांप्रभवेत्तुमहर्घता ।।४०।।

अर्थ – कन्याराशिको मंगल होवे तब चन्दन पाटका वस्त्र लालद्रव्य और लालवस्त्र ये सब मँहिगे होवें ।। ४० ।।

कन्याराशिगतेज्ञेहिकांचनंशुद्धशर्करा ।
मासेषष्ठेददेल्लाभंपुनःशस्तोऽभिजायते ।।४१।।

अर्थ – कन्याराशिपै बुध आवे तव से छठे महीनेतक सोना उत्तम खांड ये लाभ देवैं अर्थात् मँहिगे रहैं फिर सस्ते हो जावैं ।। ४१ ।।

कन्याराशिगतेजीवेमेघवृष्टिस्तथोत्तमा ।
सुभिक्षंसर्वधान्यानामारोग्यंलभतेजनः ॥४२॥

अर्थ – कन्याराशिका बृहस्पति होवे तब मेघोंकी उत्तम वर्षा होवे और संपूर्ण धान्य सस्ते होवें सब मनुष्योंमें आरोग्य रहे अर्थात् कुशल रहे ॥ ४२ ॥

कन्याराशिगतेशुक्रेसर्वसस्यंविनश्यति ।
तत्रधान्यमहर्घाणिशालिश्चैवविशेषतः ॥४३॥

अर्थ – कन्याराशिपै शुक्र आवे तब संपूर्ण खेतियोंका नाश हो जावे और अन्न महिंगे होवें विशेष करिके उत्तम चावल महिंगे होवें ॥ ४३ ॥

भास्करस्यसुतोयर्हिकन्याराशिंप्रविश्यति ।
जलशोषंभवेद्वायुर्मध्यदेशेनृपक्षयम् ॥४४॥

अर्थ – जब कन्याका शनैश्चर होवे तब जलका शोष होवे और वायु चले मध्यदेशमें राजाओं का नाश होवे ॥ ४४ ॥

राहुकेतूयदाकन्यांधात्रीफलंचपिप्पली ।
मासमेकंद्वयंचैवमहर्घंत्रिगुणंभवेत् ॥४५॥

इतिकन्याराशिग्रहचारः

अर्थ – राहु केतु ये कन्याराशिपै आवें तब आंवले पीपली ये एक महीना तक तथा दो महीनोंतक तिगुने महिंगे हो जावें ॥ ४५ ॥

इति कन्याराशिके ग्रहचारका फल

तुलाराशियदाभानुरेतदेवमहर्घता ।
धान्यानांहेमद्रव्याणांकुञ्जराणांविनाशता ॥४६॥

अर्थ – तुलाराशिपै सूर्य होवे तब सुवर्ण द्रव्य सब प्रकार के अन्न ये महिंगे होवें और हस्तियोंका नाश होवे ॥ ४६ ॥

भूमिपुत्रस्तुलेयातःसर्वधान्यंहर्घता ।
माषामुद्गास्तथासूत्रंकार्पासादिविशेषतः ॥४७॥

अर्थ – मंगल तुलाराशिका होवे तब सब धान्य महिंगे होवें और उडद मूंग सूत कपास आदि वस्तु विशेष करिके महिंगे होवें ॥ ४७ ॥

यदाचतुलाराशिस्थोनिशाकरसुतःस्थितः ।
मेघश्चजायतेतत्रमेदिनीकलहान्विता ॥४८॥

अर्थ – तुलाराशिपै बुध होवे तब वर्षा होवे और पृथ्वीपै कलह क्लेश युद्ध आदि होवें ॥ ४८ ॥

तुलाराशिगुरुर्गत्वाज्वरव्याधिर्विनिर्दिशेत् ।
सुभिक्षंतत्रज्ञातव्यंक्वचित्क्वापिमहर्घता ॥४९॥

अर्थ – तुलाराशिका बृहस्पति होवे तब संसारमें ज्वरकी बीमारी होवे और सुभिक्ष होवे कहीं कहीं अन्न मँहिगे होवें ॥ ४९ ॥

यदादैत्यगुरुश्चैवतुलराशिप्रवर्तते ।
मेदिन्यांक्षेममारोग्यंकिंचित्किंचिद्विरोधकृत् ॥५०॥

अर्थ – तुलराशिका शुक्र होवे तब पृथ्वीपै क्षेम कुशल रहै और कहीं कहीं विरोध ईर्षा आदि उपद्रह होवें ॥ ५० ॥

सूर्यपुत्रेतुलेजातेह्यग्न्युपद्रवमादिशेत् ।
सप्तधान्यमहर्घाणिमेदिनीनष्टकारिका ॥५१॥

अर्थ – तुलका शनैश्चर होवे तब संसारमें अग्निका उपद्रव होवे सातों अन्न मँहिगे होवें पृथ्वी सबको नष्ट करनेवाली हो जावे ॥ ५१ ॥

यदाराहुस्तुलेयाति क्रूरः क्रूरसमन्वितः ।
मेदिन्यांसस्यनाशः स्याद्दुर्भिक्षंतत्रदारुणम् ॥५२॥
इति तुलराशिग्रहचारफलम्

अर्थ – तुलराशिपै राहु आवे और क्रूर क्रूरग्रहके संगमें होवे तो पृथ्वीपै खेतियोंका नाश होवे और दारुण दुर्भिक्ष होवे ॥ ५२ ॥

इति तुलराशिके ग्रहचारका फल संपूर्ण ।

यदार्कोवृश्चिकेयातितदार्घंजायतेसमम् ।
और्णिकंसर्वद्रव्याणिस्वल्पार्घंचप्रदीयते ॥५३॥

अर्थ – जब वृश्चिक राशिपै सूर्य आवे तब ऊन वस्त्र मँहिगे हो जावें और चांदी तांबा आदि द्रव्य कछु मँहिगे होवें ॥ ५३ ॥

यदावृश्चिकराशिस्थोजायतेचमहीसुतः ।
महर्घंसर्वद्रव्याणांनृपाणांकोपमादिशेत् ॥५४॥

अर्थ – जब वृश्चिक राशिका मंगल होवे तब सब द्रव्य मँहिगे होवें और राजाओंके क्रोध ईर्षा होवे ॥ ५४ ॥

वृश्चिकेचगुरुर्यातोदुर्भिक्षंतत्रजायते ।
स्वल्पवृष्टिर्भवेत्तत्रभूर्युक्तानरकिल्बिषैः ॥५५॥

अर्थ – वृश्चिक राशिपै बृहस्पति आवे तब दुर्भिक्ष होवे और वर्षा थोडी होवे. पृथिवी मनुष्योंके पापोंसे युक्त हो जावे ॥ ५५ ॥

वृश्चिकेचगतेशुक्रेसर्वधान्यसमर्घता ।
लोकस्तुनिर्भयस्तत्रसुखस्वास्थ्यंप्रवर्तते ॥५६॥

अर्थ – वृश्चिकराशिपै शुक्र होवे तब धान्य सस्ते होवें और सब लोग निर्भय रहें तथा स्वस्थ चित्त होके सुखसे विचरें ॥ ५६ ॥

यदावृश्चिकगः सौरिर्मेदिनीदुःखसंयुता ।
वर्षमात्रमथोचोर्ध्वमिंद्रप्रस्थोविनश्यति ॥५७॥

अर्थ – वृश्चिक राशिपै शनैश्चर होवे तब पृथ्वी दुःखसे युक्त रहे और एक वर्ष पीछे इंद्रप्रस्थ अर्थात् दिल्ली शहरका नाश होवे ॥ ५७ ॥

यदावृश्चिकराशिस्थः सैंहिकेव्योपिजायते ।
वामादिष्टतमेतंचषष्ठेमासेचरौरवम् ॥५८॥

अर्थ – वृश्चिक राशिका राहु होवे तब विपरीत वस्तु करने वालोंको मनोवांछित फल सिद्ध होवे और छठे महीनेमें पृथ्वीपै हाहाकार होवे ॥ ५८ ॥

इति वृश्चिकराशिके ग्रहचारका फल ।

धनूराशिगतोभानुः सुभिक्षंतत्रजायते ।
तिलतैलंमहर्घंचकार्पासादितथैव च ॥५९॥

अर्थ – धनराशिका सूर्य होवे तब सुभिक्ष होवे और तिल तैल महिंगा होवे और कपास आदि वस्तु महिंगे होवें ॥ ५९ ॥

यदानिशाकरश्चैवमीनेयातितथाहये ।
ध्रुवंवातद्दिनेवृष्टिर्भविष्यतिनचान्यथा ॥६०॥

अर्थ – जब मीनका तथा धनका चन्द्रमा होवे तब निश्चय करके उसी दिन वर्षा होवे इसमें सन्देह नहीं ॥ ६० ॥

धनूराशिगतेभौमेमूलद्रव्यतृणानि च ।
काष्ठंचघृतकार्पासंमहर्घंचचतुष्पदाम् ॥६१॥

अर्थ – धनराशिपै मंगल होवे तब मूल द्रव्य तृण काष्ठ घृत कपास चौपाये (पशु) ये सब महँगे होवें ।। ६१ ।।

धनुर्मीनेबुधोयातिमारयेत्तुमृगान्गजान् ।
राजाविरोधकृत्तत्रचान्यथानभविष्यति ।।६२।।

अर्थ – धनराशिका तथा मीनराशिका बुध होवे तब मृग हस्ती इन्होंका नाश होवे और राजा प्रजाका विरोध होवे इसमें अन्यथा नहीं ।। ६२ ।।

धनूराशिस्थितोजीवोगोधूमादिमहर्घता ।
वर्षाकालेभवेत्सस्यंमहर्घंतैलमद्ययोः ।।६३।।

अर्थ – धनराशिपै बृहस्पति होवे तब गेहूं आदि अन्न महँगे होवें और वर्षा कालमें खेतियां निपजें तेल मदिरा इत्यादि वस्तु महँगी होवें ।। ६३ ।।

यदाचधनूराशिस्थोदैत्याचार्यः प्रवर्तते ।
महर्घंचविजानीयात्सर्वंसस्यंविनश्यति ।।६४।।

अर्थ – धनराशिका शुक्र होवे तब सब धान्य महँगे होवें और सब खेतियोंका नाश होवे ।। ६४ ।।

धनूराशौस्थितः सौरिर्गर्जत्यपिनवर्षति ।।
तोयहीनाधरातत्रदुर्भिक्षंचविनिर्दिशेत् ।।६५।।

अर्थ – धनराशिपै शनैश्चर होवे तब गर्जता हुआ भी मेघ नहीं वर्षे और पृथ्वी जलसे हीन हो जावे दुर्भिक्ष होवे ।। ६५ ।।

धनूराशिस्थितोराहुःपञ्चमासाधिकंभवेत् ।।
महर्घचध्रुवंयांतिकुञ्जराश्चहयास्तथा ।।६६।।

अर्थ – धनराशिका राहु होवे तब पांच महीनों पीछे हस्ती घोडे निश्चय महँगे होवें ।। ६६ ।।

इति धनराशिका ग्रहफल ।

मकरेचस्थिते भानौघृततैलमहर्घता ।।
सुभिक्षंतत्रधान्यानांलोकानां च शुभंभवेत् ।।६७।।

अर्थ – मकरका मंगल होवे तब सब धान्य सस्ते होवें और लोगोंको शुभफल होता है ।। ६७ ।।

मकरेचस्थितेभानौघृततैलमहर्घता ।।

सुभिक्षंसर्वधान्यानांलोकानांदुःखपीडनम् ।।६८।।

अर्थ – मकरका मंगल होवे तब घृत तेल महिंगे होवें और सब धान्य सस्ते होवें लोगोंको दुःख पीडा होवे ।। ६८ ।।

निशापतेश्चतनयःशनिक्षेत्रेयदाभवेत् ।

समभावःसुखंदुःखतथैवचशुभाशुभम् ।।६९।।

अर्थ – शनिके क्षेत्रमें बुध आवे तब अन्न आदिका समान भाव रहै और शुभ अशुभ दोनों प्रकारके फल होवें ।। ६९ ।।

मकरेचगुरुश्चैवदुर्भिक्षंघोरदारुणम् ।

राज्ञांपरस्परंयुद्धं त्रिमासान्तेशुभंभवेत् ।।७०।।

अर्थं – मकरका बृहस्पति होवे तब दारुण घोर दुर्भिक्ष होवे और राजाओंका आपसमें युद्ध होवे और तीन महीनों के पीछे शुभफल होवे ।। ७० ।।

मकरेचयदाशुक्रः सर्वसस्यविनाशकृत् ।

जायतेऽत्रसमर्घाणिनात्रकार्याविचारणा ।।७१।।

अर्थ – मकरका शुक्र होवे तब सब खेतियोंका नाश होवे और सब अन्न महिंगे होवें इसमें कछु विचार नहीं करना ।।७१ ।।

मकरेचयदासौरिर्दुर्भिक्षंतत्रदारुणम् ।

कामार्ताश्चविनश्यंतिह्यन्यदेशेशुभंभवेत् ।।७२।।

अर्थ – मकरका शनि होवे तब दारुण दुर्भिक्ष होवे और कामी पुरुषोंका नाश होवे और अन्य देशमें शुभफल होवे ।। ७२ ।।

मकरचयदाराहुःकांस्यसूत्रस्यसंग्रहः ।

मासेतृतीयेऽतीतेतुलाभश्चैवचतुर्गुणः ।।७३।।

अर्थ – मकरका राहु होवे तब कांसी सूत इनका संग्रह करनेमें तीसरे महीनेके पीछे चौगुना लाभ होवे ।। ७३ ।।

इति मकरराशिके ग्रहचारका फल ।

कुंभराशौयदाभानुः समृद्धिः समभावता ।

लवणंचतथातैलंस्वल्पार्घं चैवदापयेत् ।।७४।।

अर्थ – कुंभराशिका सूर्य होवे तब अन्न सस्ता होवे और नमक तेल ये कछु २ महिंगे होवें ।। ७४ ।।

भूसुते कुंभराशिस्थे सर्वधान्यमहर्घता ।
एवं प्रजायतेह्यर्घं लोकमध्येतुनिर्भयम् ।।७५।।

अर्थ – कुम्भराशिका मंगल होवे तब सब धान्य महिंगे होवे इस प्रकार अन्न महिंगे होवें और संसारमें निर्भयता रहे ।। ७५ ।।

कुंभराशिगतेजीवेमेघः स्वल्पांबुवर्षति ।
कृषिनाशंचदुर्भिक्षंपूर्वदेशेमहर्घता ।।७६।।

अर्थ – कुंभराशिका बृहस्पति होवे तब मेघ थोडा जल वर्षे और खेतीका नाश और दुर्भिक्ष होवे और पूर्वके देशमें अन्नका महिगा भाव रहै ।। ७६ ।।

घटमीनगतेशुक्रेदुर्भिक्षंप्रचुरंभवेत् ।
मेदिनीसुखसंयुक्ताभविष्यतिनसंशयः ।।७७।।

अर्थ – कुंभका वा मीनका शुक्र होवे तब अत्यन्त दुर्भिक्ष होवे और पृथ्वी सुखसे संयुक्त हो जावे इसमें संदेह नहीं ।। ७७ ।।

कुंभराशिगतः सौरिर्वर्षमात्रंतदर्धकम् ।
कालिंद्याउपकंठेचतत्रधान्यमहर्घता ।।७८।।

अर्थ – कुंभराशिका शनि होवे तब वर्षदिनतक अथवा छः महीनोंतक यमुना नदीके तीरपै सब धान्य महिंगे होवे ।। ७८ ।।

यदाराहुः स्थितः कुंभे क्रूरग्रहसमन्वितः ।
गृहीतेसूत्रगोधूमेमासेषष्ठेचतुर्गुणम् ।।७९।।

अर्थ – कुंभका राहु क्रूर ग्रहके संगमें होवे तब सूत गेहूं इनके खरीदनेमें छठे महीनेमें लाभ होवे ।। ७९ ।।

इति कुंभराशिके ग्रहचारका फल

मीनराशिगतेभानौसर्वधान्यमहर्घता ।
लवणंतिलतैलंचमहर्घंसमजायते ।।८०।।

अर्थ – मीनराशिका सूर्य होवे तब सब धान्य महिंगे होवें और लवण तिल तेल ये सब महिंगे होवें ।। ८० ।।

मीनराशिकुजश्चैवतृणंकाष्ठंचतुष्पदः ।
महर्घंजायतेसर्वंगृह्यतेतत्रपंडितैः ।।८१।।

अर्थ–मीनराशिका मंगल होवे तब तृण काष्ठ चौपाये (पशु) ये सब महँगे होवें इस वास्ते पंडित जनोंको खरीदने चाहिये ।। ८१ ।।

यदासुरगुरुर्मीनेदुर्भिक्षंपूर्वदेशके ।
पुनश्चजायतेक्षेमंसुभिक्षंचतथाभवेत् ।।८२।।

अर्थ – जब मीनका बृहस्पति होवे तब पूर्वदेशमें दुर्भिक्ष होवे पीछे क्षेम कुशल होवे और सुभिक्ष होवे ।। ८२ ।।

अर्कपुत्रोयदामीनेदुर्भिक्षंतत्रदुस्तरम् ।
सागराः सर्वनद्यश्चविनश्यंतिचतुष्पदाः ।।८३।।

अर्थ – मीनका शनि होवे तब दारुण दुर्भिक्ष होवे और समुद्र सब नदी इत्यादिकोंमें भी जलका नाश होवे चौपायोंका नाश होवे ।। ८३ ।।

मीनराशिगतेराहौसर्वधान्यस्यसंग्रहः ।
वर्षमात्रंचदुर्भिक्षंपश्चात्सौभिक्षमेवच ।।८४।।

इत्यर्घप्रकाशेद्वादशराशिग्रहचारफलम्

अर्थ – मीनराशिका राहु होवे तब सब धान्योंका संग्रह करना चाहिये क्योंकि एक वर्षतक दुर्भिक्ष होता है पीछे सुभिक्ष होता है ।। ८४ ।।

इति अर्घप्रकाशभाषाटीकायां द्वादशराशिग्रहचारफलम् ।।

अन्यच्चाहंप्रवक्ष्यामिग्रहमिश्रफलाफलम् ।।
दुर्भिक्षंजायतेयेनसुभिक्षंवातथैवच ।।१।।

अर्थ–अब ग्रहोंका मिलाप होनेके शुभाशुभ फलको कहेंगे जिन योगोंसे दुर्भिक्ष और सुभिक्ष होता है तिनको कहेंगे ।। १ ।।

योगाःशुभकराः संति ये च विग्रहकारकाः ।
व्याधिकरादुःखकरास्तान्योगान्प्रवदाम्यहम् ।।२।।

अर्थ – जो शुभकारक तथा विग्रह करनेवाले वा व्याधि दुःख करनेवाले योग कहे हैं तिनको अब कहते हैं ।। २ ।।

रविराहुकुजाश्चैवशशिशुक्रशनैश्चराः ।
एकराशियदायान्तिपूर्वदेशविनाशकाः ॥३॥

अर्थ – सूर्य राहु मंगल चंद्रमा शुक्र शनैश्चर ये ग्रह एक राशिपै स्थित होवें तब पूर्व देशका नाश होवे ॥ ३ ॥

भूपालास्तत्रपीडचन्तेमृत्युस्तेषांभवेद्ध्रुवम् ।
मार्गेनगम्यतेलोकैर्भयभीताचमेदिनी ॥४॥

अर्थ – इस पिछले योगमें राजाओंमें पीडा होवे और तिन्होंकी मृत्यु अवश्य होवे मनुष्योंसे मार्गमें भी नहीं चला जावे पृथ्वी भयभीत हो जावे ॥ ४ ॥

रविरंगारकोराहुश्चंद्रजोपिशनैश्चरः ॥
एकराशियदायांतिदाक्षिणात्यक्षयोभवेत् ॥५॥

अर्थ – सूर्य मंगल राहु बुध शनैश्चर ये ग्रह एकराशिपै स्थित होवें तब दक्षिण देशके मनुष्योंका नाश होवे ॥ ५ ॥

कुजोऽर्कश्चशनीराहुःशशांकोनिर्जरोगुरुः ॥
एकराशियदायान्तितदादुर्भिक्षकारकाः ॥६॥

अर्थ – मंगल सूर्य शनि राहु पूर्णचंद्रमा और बृहस्पति ये एक राशिपै स्थित होवें तब दुर्भिक्ष होवे ॥ ६ ॥

तदाचराज्यभंगः स्यात्क्रोधयुक्ताचमेदिनी ॥
कुरुतेछत्रभंगंचनात्रकार्याविचारणा ॥७॥

अर्थ – इसी योगमें राज्यभंग होवे पृथ्वी क्रोधयुक्त होवे और पृथ्वीपै छत्र-भंग होवे अर्थात् राजाका नाश होवे इसमें कछु विचार नहीं करना ॥ ७ ॥

आदित्यगुरुशुक्राश्चभूमिपुत्रस्तथैव च ।
एकत्रयदितिष्ठंतिसर्वधान्यमहर्घता ॥८॥

अर्थ – सूर्य बृहस्पति शुक्र मंगल ये एक राशिपै होवें तब सब धान्य महँगे होवें ॥ ८ ॥

कुजार्केन्दुबुधाजीवः सिंहराशिस्थितायदि ।
राज्यभंगःप्रजाकष्टंछत्रभंगोभवेद्ध्रुवम् ॥९॥

अर्थ – मंगल सूर्य चंद्रमा बुध बृहस्पति ये सिंहराशिपै स्थित होवें तब राज्यभंग होवे प्रजामें कष्ट होवे निश्चयकरके छत्रभंग होवे ॥ ९ ॥

आदित्यबुधशुक्राश्चह्येकराशित्रयोर्यदि ।
यानिकानिचधान्यानिसर्वंसाम्यंस्मृतंबुधैः ।।१०।।

अर्थ – सूर्य बुध शुक्र ये तीनों ग्रह एक राशिपै स्थित होवें तब जितने धान्य हैं सो सव समान भावमें रहैं ऐसे बुद्धिमान् पंडितोंने कहा है ।। १० ।।

आदित्यगुरुशुक्राश्चह्येकनक्षत्रसंयुता: ।
वायोरुपद्रवस्तत्रह्यग्न्युद्वेगस्तथैवच ।।११।।

अर्थ – सूर्य शुक्र बृहस्पति ये एक नक्षत्रपै स्थित होवें तब वायु अधिक चलनेका उपद्रव होवे अथवा मनुष्योंमें अग्निसे भय होवे ।। ११ ।।

आदित्योभार्गवश्चैवतृतीयोगुरुरेवच ।
एकराशिश्चतिष्ठंतिमेघाश्चप्रबलाधिका: ।।१२।।

अर्थ – सूर्य शुक्र बृहस्पति ये तीनों एकराशिपै स्थित होवें तब मेघ अत्यन्त प्रबल होके वर्षैं ।। १२ ।।

आदित्योभूसुत: शुक्रोह्येकनक्षत्रराशिगा: ।
घृतंतैलंमसूरान्नंमहर्घंदेशविग्रहः ।।१३।।

अर्थ – सूर्य मंगल शुक्र ये एक नक्षत्रपै तथा एक राशिपै स्थित होवें तब घृत तेल मसूरसंज्ञक अन्न ये सब महिंगे होवें और देशोंमें विग्रह होवे ।। १३ ।।

आदित्यगुरुशुक्राश्चसैंहिकेयशनैश्चरौ ।
एकराशियदायाता:सुभिक्षंक्षेमपुष्कलम् ।।१४।।

अर्थ – सूर्य बुध बृहस्पति राहु शनैश्चर ये एक राशिपै स्थित होवें तब दुर्भिक्ष अर्थात् संवत् होवे और मेघ उत्तम वर्षैं ।। १४ ।।

आदित्यबुधजीवाश्चराहुश्चार्कसुत.स्थित: ।
एकराशियदायान्तिसुभिक्षंमेघपुष्कलम् ।।१५।।

अर्थ – रवि, बुध, बृहस्पति, राहु, शनि ये एक जगह स्थित होवें तब सुभिक्ष होवे उत्तम मेघ वर्षैं ।। १५ ।।

भूमिपुत्रोयदासौरि:शुक्रोपिनिर्जरोगुरु: ।
एकत्रयदिदृश्यंतेनृपाणांक्षयमाविशेत् ।।१६।।

अर्थ – मंगल शनि शुक्र और बृहस्पति ये एक राशिपै स्थित होवें तब राजाओंका नाश होवे ।। १६ ।।

शुक्रश्चांगारकः सौरिरेकत्रयदिदृश्यते ।
दुर्भिक्षंजायतेतत्रह्यग्निदाहोभवेद्ध्रुवम् ॥१७॥

अर्थ – शुक्र मंगल शनि ये एक जगह स्थित होवें तब दुर्भिक्ष होवे और अग्निका दाह होवे ॥ १७ ॥

शनिःशुक्रजीवौधरण्याःसुतश्चयद्येकराशौग्रहपंचकंस्यात् ।
जलंनमेघेकृषिः सर्वनष्टा तस्मिन् वर्षेकुंकुमादेर्महर्घम् ॥१८॥

अर्थ – शनि शुक्र बृहस्पति मंगल ये पांचों ग्रह एक राशिपै होवें अथवा एक नक्षत्रपै होवें तब मेघोंमें जल न रहै संपूर्ण पृथ्वी नष्ट हो जावे और उस वर्षमें केशर रोली इत्यादि वस्तु महिंगी होवें ॥ १८ ॥

गुरुःशुक्रसौरीबुधःसैंहिकेयोग्रहपंचकंस्याद्यदि चैकराशौ ।
नृदेशपीडादुर्भिक्षंधरण्यांस्वर्णादिधात्वष्टमहर्घता च ॥१९॥

अर्थ – बृहस्पति शुक्र शनैश्चर बुध राहु ये पांचों ग्रह एक राशिपै होवें अथवा एक नक्षत्रपै होवें तब सब देशोंके मनुष्योंमें पीडा होवे और पृथ्वीपै दुर्भिक्ष होवे सुवर्ण आदि आठों धातु महिंगे होवें ॥ १९ ॥

रवींदुजीवायदिचैकऋक्षेजनदेशपीडादिसमुद्भवेच्च ।
यवधान्यमुद्गक्रयोदिव्यवस्त्रंबहुलंचलाभं गतेसप्तमासे ॥२०॥

अर्थ – सूर्य चंद्रमा बृहस्पति ये एक नक्षत्रपै स्थित होवें तब मनुष्योंके देशोंमें पीडा होवे और जव मूंग इनके खरीदनेमें तथा उत्तम वस्त्रोंके खरीदनेमें सात महीनोंके पीछे बहुतसा लाभ होवे ॥ २० ॥

रविश्चांद्रिरिंदुर्गुरुर्भार्गवश्चयद्येकराशौस्थिता एवपंच ।
घनागर्जमानाःसजलाचवृष्टिस्तदामहर्घंदिशिनैर्ऋतेच ॥२१॥

अर्थ – सूर्य बुध चंद्रमा बृहस्पति शुक्र ये पांच ग्रह एक राशिपै स्थित होवें तब मेघ अत्यंत वर्षे और नैर्ऋत्य दिशामें अन्न महिंगा होवे ॥ २१ ॥

जीवार्कशुक्रारविनंदनोवापृथ्वीसुतोवायदिचैकराशौ ।
भूपालकष्टंजनदेशपीडाधान्यानिसर्वाणिमहर्घितानि ॥२२॥

अर्थ – बृहस्पति सूर्य शुक्र शनि मंगल ये एक राशिपैस्थित होवें तब राजाओं में कष्ट हो और जनोंके देशोंमें पीडा होवे सब धान्य महिंगे होवें ॥ २२ ॥

यत्रराशौरविर्यातितत्रशुक्रोयदास्थितः ।
वातश्चजायतेदीर्घंसर्वंह्यर्घंसमस्थितम् ॥२३॥

अर्थ – जिस राशिपै सूर्य होवे उसीपै शुक्र होवे तौ अत्यंत वायु चले और सब वस्तु महिंगी हो जावें ॥ २३ ॥

शनीराहुजीवौयदाचैकराशौपाषाणवृष्टिसहितासलिलस्यवृष्टिः ।
दुःखंचसैन्येषुनृपाद्भयंचधान्यानिसर्वाणिसुभिक्षितानि ॥२४॥

अर्थ – शनि राहु बृहस्पति ये एक राशिपै स्थित होवें तब ओलों सहित वर्षा होवे और राजाकी सेनामें दुःख होवे राजासे प्रजाको भय होवे और सब धान्य सस्ते होवें ॥ २४ ॥

अमावास्यांतुलेचंद्रेमकरेचेत्तुमंगलः ।
विनाचक्रंभवेच्चूर्णंवाणिज्यंनिष्फलंभवेत् ॥२५॥

अर्थ – अमावास्याके दिन तुलाका चंद्रमा होवे और मकरका मंगल होवे तब राजाके चक्र आदि शस्त्रके विनाही अर्थात् रोगसे ही सब मनुष्योंका चूर्ण हो जावे और वाणिज्य व्यवहार निष्फल होवे ॥ २५ ॥

सुरगुरुशुक्रौक्षितिनंदनोवायद्येकऋक्षेह्यथवाचैकराशौ ।
सुभिक्षमन्नंनृभिरत्रग्राह्यंमासेचतुर्थे बहुलश्चलाभः ॥२६॥

अर्थ – बृहस्पति शुक्र मंगल ये एक नक्षत्रपै अथवा एक राशिपै स्थित होवें तब सुभिक्ष होवे तहां मनुष्योंको अन्नका संग्रह करना चाहिये चौथे महीनेमें बहुत सा लाभ होता है ॥ २६ ॥

आदित्योगच्छतिह्यग्रेपृष्ठेभवतिभार्गवः ।
मध्येसोमसुतः स्थित्वादुर्भिक्षंतत्रजायते ॥२७॥

अर्थ – सूर्य आगे होवे और शुक्र पीछे होवे बुध इन दोनोंके बीचमें होवे तब दुर्भिक्ष होता है ॥ २७ ॥

एकत्रशनिशुक्रौचपृष्ठेचंद्रसुतोभवेत् ।
सुभिक्षंजायतेतत्रधान्येनपूरितामही ॥२८॥

अर्थ – शनि शुक्र ये एक जगह होवें और चंद्रमा इनसे पीछे होवे तब सुभिक्ष होता है और पृथ्वी धान्यसे पूर्ण हो जाती है ॥ २८ ॥

मेषेयदिभवेद्भानुर्वृषेभूमिसुतः स्थितः ।
नृपतेश्चभवेद्व्याधिर्लोकानांचमहद्भयम् ।।२९।।

अर्थ – मेषका सूर्य होवे और वृषका मंगल होवे तब राजाओंको पीडा होवे और मनुष्योंको बहुत सा भय होवे ।। २९ ।।

भार्गवोभौमसौरीचवृषेयांतित्रयोयदि ।
दुर्भिक्षंराज्यभंगंचमेदिन्यामग्नितोभयम् ।।३०।।

अर्थ – शुक्र मंगल शनि ये तीनों वृषपै स्थित होवें तब दुर्भिक्ष होवे और राज्यभंग होवे पृथ्वीपै अग्निसे भय होवे ।। ३० ।।

मेषेशनैश्चरोभानुर्भार्गवोभूसुतस्तथा ।
एकार्णवोमहान्पृथ्व्यांदुर्भिक्षंतत्रजायते ।।३१।।

अर्थ – मेष राशिपै शनैश्चर सूर्य शुक्र मंगल ये स्थित होवें तब पृथ्वीपै महान् एकार्णव जल हो जावे और दुर्भिक्ष होवे अर्थात् बहुत पानी वर्षनेसे काल पडे ।। ३१ ।।

मंगलोराहुशुक्रौचस्थितायदि त्रयस्तुले ।
परस्परंनृपैर्युद्धंरुधिरैःपूरितामही ।।३२।।

अर्थ – मंगल राहु शुक्र ये तीनों एक राशिपै होवें तब राजाओंका आपसमें युद्ध होवे और पृथ्वी रक्तसे पूरित हो जावे ।। ३२ ।।

मीनराशिगतः सौरिः कर्कराशौगुरुर्भवेत् ।
तुलाराशौभवेद्भौमोदुर्भिक्षंतत्रजायते ।।३३।।

अर्थ – मीनराशिका शनि होवे और कर्कराशिका बृहस्पति होवे और तुला राशिकामंगल होवे तब दुर्भिक्ष होवे ।। ३३ ।।

क्षितिजोभार्गचंद्रूचमीनराशिस्थितायदि ।
समर्घंगोवृषादीनांस्वल्पवृष्टिः प्रजायते ।।३४।।

इत्यर्घप्रकाशेग्रहमिश्रफलप्रकरणम्

अर्थ – मंगल शुक्र चंद्रमा ये मीनराशिपै स्थित होवें तब गऊ बैल आदि पशु महिंगे होवें और स्वल्पवर्षा होवे ।। ३४ ।।

इत्यर्घप्रकाशभाषायां ग्रहमिश्रफलप्रकरणम् ।।

अन्यानहंप्रवक्ष्यामितिथिवारेचयेगुणाः ।
मासेमासेऽथयैर्योगैर्नित्यंचदीयतेफलम् ॥१॥

अर्थ– तिथिवारोंमें गुण है और महीना महीना के प्रति जो योग नित्य अपना फल करते हैं उन अन्य योगों को भी अब कहते हैं ।। १ ।।

चैत्रस्यप्रथमेपक्षेबुधवारेस्तिपंचमी ।
भौमोवाकुरुतेस्वर्घंगोधूमस्यघृतस्य च ॥२॥

अर्थ – चैत्रवदी पंचमीके दिन बुधवार होवे अथवा मंगलवार होवे तो गेहूं घृत ये महिंगे होवें ।। २ ।।

चैत्रस्यपंचमीशुक्लातत्रमेघोजलंत्यजेत् ।
श्रावणेनचवर्षास्यादेवंजानीयतांध्रुवम् ॥३॥

अर्थ – चैत्रशुक्ल पंचमीके दिन जो मेघ वर्षे तो श्रावणमें वर्षा नहीं होवे ऐसे निश्चय जानना चाहिये ।। ३ ।।

दैत्यगुरुस्त्रिदशानांगुरुश्चचैत्रस्यमासेयदिचैक राशौ ।
ग्राह्यंघृतंवातिलतैलसूत्रंद्विमासमध्ये बहुलाभकारि ॥४॥

अर्थ – शुक्र बृहस्पति ये दोनों चैत्रके महीनेमें एक राशिपै स्थित होवें तो तिल तेल सूत इनका संग्रह करनेमें दूसरे महीनेमें वहुत सा लाभ होता है ।। ४ ।।

चैत्रस्यशुक्लपक्षेचतिथिवृद्धिर्भवेद्यदि ।
कृष्णेतुजायतेहानिर्धान्येनपूरितामही ॥५॥

अर्थ – चैत्रशुक्लपक्षमें यदि (जो) तिथि बढै और कृष्णपक्षमें तिथिकी हानि हुई हो तो पृथ्वी अन्नसे पूरित हो जावे ।। ५ ।।

वैशाखेकृष्णपक्षेचसप्तम्यांशनिवासरे ।
भरण्यादिचतुर्ॠक्षेयदाभौमोभविष्यति ॥६॥
पिप्पलीनारिकेलंचताम्रंकांस्यंचपूगजम् ।
तथाचरक्तवस्त्राणितस्मिन्योगेमहर्घता ॥७॥

अर्थ – वैशाख महीनेके कृष्णपक्ष में सप्तमीके दिन शनिवार होवे और तव भरणीसे आदिले चार नक्षत्रोंपै मंगल होवे तो तिस योगमें पिप्पली नारियल तांवा कांसा सुपारी लालवस्त्र ये सब वस्तु महिंगी होती हैं ।। ६ ।। ७ ।।

वैशाखत्रयोदशीकृष्णायदाभौमार्कवासरा ।

महर्घंखंडतांबूलंसैंधवंरक्तचंदनम् ।।८।।

अर्थ – वैशाख कृष्ण त्रयोदशीको मंगलवार होवे तो खांड नागरपान सेंधा नमक लालचन्दन ये मंहिगे होवें ।। ८ ।।

ज्येष्ठप्रतिपदाकृष्णाभौमार्कबुधवासरा ।

एवंभवेद्यदायोगोलोकानांव्याधिपीडनम् ।।९।।

अर्थ – ज्येष्ठकृष्णपक्षकी प्रतिपदा के दिन मंगल रवि बुध ये वार होवें तो मनुष्योंके अनेक प्रकारकी व्याधिसे पीडा उत्पन्न होवे ।। ९ ।।

सैवाप्रतिपदापूर्वागुर्विन्दुशुक्रवासरा ।

जलमध्ये भवेत्पृथ्वीपारावारसमाकुलम् ।।१०।।

अर्थ – इसी ज्येष्ठकृष्णपक्षकी प्रतिपदामें जो बृहस्पति सोम शुक्र ये वार होवें तो पृथ्वी जलसे डूब जावे अर्थात् बहुत वर्षा होवे ।। १० ।।

अथवासौरिवारेणसैवप्रतिपदाभवेत् ।

दुर्भिक्षंरोगपीडास्याच्छत्रभंगंचनान्यथा ।।११।।

अर्थ – अथवा इसी प्रतिपदाके दिन शनिवार होवे तो दुर्भिक्ष होवे राजाको पीडा होवे छत्रभंग होवे इसमें अन्यथा नहीं ।। ११ ।।

ज्येष्ठमासेत्वमावास्यांदिवावायदिवानिशि ।

आकाशेदृश्यतेमेघोह्यनावृष्टिर्भयावहा ।।१२।।

अर्थ – ज्येष्ठकी अमावास्याके दिनमें वा रात्रिमें यदि आकाशमें बादल होवें तो वर्षाऋतुमें मेघ नहीं वर्षे संसारको भय होवे ।। १२ ।।

आषाढे कृष्णपक्षेचह्यष्टम्यांदृश्यते शशी ।

भवेच्चेद्धनमध्येतुबहुवृष्टेश्चवर्षणम् ।।१३।।

अर्थ – आषाढकृष्णपक्षकी अष्टमीको जो बादलोंमें चंद्रमा दीखे तो बहुतसी वर्षा होवे ।। १३ ।।

अष्टम्यांनिशिचंद्रश्चनिर्मलंचोदयंभवेत् ।

वर्षाकाले तदाब्देतुजलंकूपेषदृश्यते ।।१४।।

अर्थ – आषाढ कृष्ण पक्षकी अष्टमीमें जो रात्रिमें निर्मल चन्द्रमा उदय होवें तो उस संवत्में वर्षाकालमें कूवोंमें जल दीखे अर्थात् मेघ कहीं भी न वर्षे ।। १४ ।।

आषाढ्याःपौर्णमास्याश्चयदावृद्धिर्भविष्यति ।
मासत्रयंसुभिक्षंचपश्चाद्यातिमहर्घताम् ।।१५।।

अर्थ – आषाढकी पूर्णमासी यदि बढ जावे तो तीन महीनोंतक सुभिक्ष संवत् होवे फिर अन्न महिंगा भाव होवे ।। १५ ।।

श्रावणेशुक्लसप्तम्यांयदिमेघः प्रवर्तते ।
भवंतिसर्वसस्यानिधनधान्यसमाकुलम् ।।१६।।

अर्थ – श्रावण शुक्लसप्तमीके दिन जो मेघ वर्षे तो सब खेतियां निपजें और सब प्रकारके धान्य सस्ते होवें ।। १६ ।।

श्रावणेकृत्तिकायत्रतत्रतोयंयदाभवेत् ।
चत्वारोमासावर्षन्तिसर्वसस्यंविवर्धनम् ।।१७।।

अर्थ – श्रावणके महीनेमें कृत्तिका नक्षत्रके दिन जो मेघ वर्षे तो चारों महीनोंमें वर्षा होवे और सब खेतियां बढें ।। १७ ।।

भाद्रपदेऽष्टमीकृष्णारोहिणीशनिवासरे ।
शुक्रार्कवारौस्यातांयवगोधूममहर्घता ।।१८।।

अर्थ – भाद्रपद कृष्ण अष्टमीके दिन रोहिणी नक्षत्र होवे और शनिवार होवे तथा शुक्र सूर्यवार होवे तो यव गेहूं ये महिंगे होवें ।। १८ ।।

तथैवपूर्वयोगेनद्रव्यमेतन्निरीक्षयेत् ।
हरिद्राजीरकंचैवपारदंसीसकंतथा ।।१९।।

अर्थ – इसी पहिले योग होनेमें हलदी जीरा पारा सीसा इन सब वस्तुओंको ग्रहण करें ये सब महिंगे होते हैं ।। १९ ।।

कस्तूरीतिलतैलंचगुडंहिंगुमहर्घता ।
रक्षयेदात्रिमासांश्चपश्चाद्विक्रयणाद्ध्रुवम् ।।२०।।

अर्थ – इसी योगमें कस्तूरी तिल तेल गुड हींग ये वस्तु महिंगे होवें तीन महीनोंतक इनको रक्खे फिर बेचें ।। २० ।।

भाद्रपदद्वितीयायांघनोहिदृश्यतेक्वचित् ।
संग्रहःसर्वधान्यानांषष्ठेमासेतुविक्रयेत् ।।२१।।

अर्थ – भाद्रपदकी द्वितीयाको जो कहीं मेघ वर्षे तो सब धान्योंका संग्रह करना चाहिये छठे महीनेमें बेचनेमें लाभ होता है ।। २१ ।।

भाद्रपदेऽष्टमीशुक्लाचंद्रार्कौतत्रनिर्मलौ ।
अन्नादिसैंधवंसूत्रंपंचमासेमहर्घता ।।२२।।

अर्थ – भाद्रपद शुक्ल अष्टमीको चन्द्रमा सूर्य निर्मल रहैं अर्थात् वादलोंसे आच्छादित नहीं होवें तो पांच महीनोंतक अन्न सेंधानमक सूत ये महँगे रहैं ।। २२ ।।

आश्विनेमासिकृष्णेचपक्षेचैवाष्टमीतिथौ ।
शनिर्वक्रोगुरुश्चैवमहर्घासूत्रमंजिष्ठौ ।।२३।।

अर्थ – आश्विनके महीनेमें कृष्णपक्षमें अष्टमीके दिन शनि वक्री होवे और बृहस्पति वक्री होवे तो सूत मँजीठ ये महँगे होवें ।। २३ ।।

आश्विनत्रयोदशीयत्रशनिवारोभविष्यति ।
आदित्यःक्रमतेऋक्षमन्नहीनाभवेन्मही ।।२४।।

अर्थ – आश्विनकी त्रयोदशीके दिन शनिवार होवे उसी दिन यदि सूर्य नक्षत्रपै अर्क होवे तो पृथ्वी अन्नसे हीन हो जावे ।। २४ ।।

आश्विनेचशनिर्वक्रीबुधोराशौचलेतवै ।
शुक्रश्चास्तमितेयातितदाचसफलाकृषिः ।।२५।।

अर्थ – आश्विनके महीनेमें शनि वक्री होवे और बुध राशिपै चलै शुक्र अस्त हो जावे तव बल सहित उत्तम खेतियां निपजें ।। २५ ।।

आश्विनेकृष्णपक्षेचसंहिकेयस्तथाशनिः ।
शणसूत्रंघृतंतैलमेतद्भावेमहर्घता ।।२६।।

अर्थ – आश्विन कृष्णपक्षमें राहु शनि ये एक राशिपै हो जावें तो शण सूत घृत तेल इनका महिंगा भाव होवे ।। २६ ।।

कार्त्तिकप्रतिपदायत्रपरिवेषंदीयतेरविः ।।
तिलतैलंचवाणिज्यंतानिसर्वाणिनिष्फलम् ।।२७।।

अर्थ – कार्तिककी प्रतिपदाके दिन जो सूर्यके कुडल हो जावे तो तिल तेलका व्यापार करना निष्फल होता है अर्थात् ये महिंगे होते हैं ।। २७ ।।

मार्गशीर्षचतुर्दश्याममावस्यांतथैवच ।
घनच्छायाकृतेभानौसुभिक्षंतत्रजायते ।।२८।।

अर्थ – मार्गशीर्षकी चतुर्दशीको वा अमावास्याको सूर्य बादलोंसे ढक जावे तो संवत् होवे ।। २८ ।।

मार्गशीर्षसितेपक्षेद्वितीयाशनिवासरः ।
दक्षिणेवहतेवातोलोकानांकष्टदोभवेत् ।।२९।।

अर्थ – मार्गशिरके शुक्लपक्षमें शनिवारसे युक्त द्वितीया होवे और दक्षिणकी वायु चलै तो लोकोंको कष्ट होवे ।। २९ ।।

पौषस्यपंचमीकृष्णाभौमवारोयदाभवेत् ।
भवेत्तुवर्षणंवृष्टेः कृषिनिष्पत्तिरुत्तमा ।।३०।।

अर्थ – पौषकृष्ण पंचमीके दिन मंगलवार होवे तो वर्षा बहुतसी होवे और खेती बहुत उत्तम निपजें ।। ३० ।।

नवम्येकादशीपौषेपूर्वेचघनगर्जितम् ।
धान्यंमहर्घंतांयातिमज्जामेदोनदृश्यते ।।३१।।

अर्थ – पौषकी नवमी वा एकादशीके दिन पूर्वमें मेघ गर्जे तो सब धान्य महिंगे होवें मनुष्योंके शरीरपै मेद मज्जा आदि मुटापा नहीं रहै ।। ३१ ।।

अथास्मिन्नेवयोगेतुपश्चिमेचलनंमहत् ।
धाराधरानवर्षंतिअन्नहीनाभवेन्मही ॥३२॥

अर्थ – इसी पिछले योगमें पश्चिमदेशके मनुष्य डुल जावें और मेघ नहीं वर्षे पृथ्वी अन्नसे हीन हो जावे ॥ ३२ ॥

पौषस्यकृष्णेचाष्टम्यांनिशीथेर्गर्जतेघने ।
वर्षाकालेचतुर्मासेजलंवर्षतिवैघनः ॥३३॥

अर्थ – पौषकृष्ण अष्टमीके दिन अर्द्धरात्रिके समय जो मेघ गर्जे तो चतुर्मासमें मेघ उत्तम जल वर्षे ॥ ३३ ॥

पौषशुक्लत्रयोदश्यांवारःसौरिःकुजस्तथा ।
घनैर्नमुच्यते तोयंगोधूमाद्यस्यसंग्रहः ॥३४॥

अर्थ – पौषशुक्ल त्रयोदशीके दिन जो शनि तथा मंगलवार होवे तो मेघ जल नहीं वर्षे तहां गेहूं आदि अन्नोंका संग्रह करना ॥ ३४ ॥

माघस्यकृष्णपक्षेतुद्वितीयातृतीयादिने ।
शुक्रसौरी भवेतांवैशस्त्रयुद्धंमहीतले ॥३५॥

अर्थ – माघ महीने के कृष्णपक्षमें द्वितीया तृतीयाके दिन जो शुक्र तथा शनिवार होवे तो पृथ्वी पै शस्त्रों करके मनुष्योंका युद्ध होवे ॥ ३५ ॥

अथास्मिन्नेवसंयोगेगुरुश्चेत्संयुतोभवेत् ।
वर्षतेदेवराजश्चेत्सुखसौख्ययंप्रजायते ॥३६॥

अर्थ – इसी पिछले योगमें जो बृहस्पति वारका योग होवे तो इन्द्र बहुतसा वर्षे पृथ्वीपै सुख उत्पन्न होवे ॥ ३६ ॥

माघमासेकृष्णपक्षे पंचमीषष्ठिसप्तमी ।
शुक्रसौरीतथाचंद्रएकांतेसंगमोयदि ॥३७॥
श्रावणेभाद्रपदेचैववर्षतिविपुलंघनः ।
अतुलाकृषिनिष्पत्तिः पुष्कलंसौख्यमाप्नुयात् ॥३८॥

अर्थ – माघमासके कृष्णपक्षमें पंचमी षष्ठी सप्तमी इन तिथियोंके दिन शुक्र शनि सोम ये वार क्रमसे होवें तो श्रावण तथा भाद्र महीने में बहुतसी वर्षा होवे और बहुत खेतियां निपजें पृथ्वीपै अत्यन्त सुख होवे ॥ ३७ ॥ ३८ ॥

एतेषांयोगमध्येतुह्येकोपियदि जायते ।
गोधूमशालिमुद्गाश्चभाद्रमासेमहर्घता ॥३९॥

अर्थ – इन इन पिछले योगोंमें जो पहिला एक योग होवे तो भाद्रपद महीनेमें गेहूं चावल मूंग ये महँगे होवें ॥ ३९ ॥

माघमासेत्रयोदश्यांतुषारःपतितोयदि ।
सर्वधान्यसमर्घाणिमेदिनीसुखमंडिता ॥४०॥

अर्थ – माघके महीनेमें त्रयोदशीके दिन जो तुषार अर्थात् धूंवर वर्षे तो सब धान्य सस्ते होवें और पृथ्वी सुखसे मंडित हो जावे ॥ ४० ॥

फाल्गुनेचैत्रमासेचपक्षद्वयतिथीषु च ।
वक्रंयातःशनिर्भौमःशीघ्रंगृह्णीतधान्यकम् ॥४१॥
पक्षान्तेह्यथवामासेद्रव्यभावश्चतुर्गुणः ।
येनरानैवगृह्णंतिपश्चात्तापंभजंतिते ॥४२॥

अर्थ – फाल्गुन तथा चैत्र महीनेके दोनों पक्षोंमें कोई भी तिथिके दिन जो शनि तथा मंगल वक्री होवे तो अन्नका भाव महँगा होता है पंदरह दिनमें अथवा महीनामें चौगुना द्रव्यकी प्राप्ति करनेवाला महँगा भाव होता है जो मनुष्य तब अन्नको ग्रहण नहीं करते हैं वे पीछे पछताते हैं ॥ ४१ ॥ ४२ ॥

फाल्गुनेहिगुरोश्चास्तंराशिवक्रस्तुजायते ।
क्वचिद्धान्यंसमर्घंचसर्वरोगोनदृश्यते ॥४३॥

अर्थ – फाल्गुनके महीनेमें बृहस्पतिका अस्त होवे अथवा वक्री होवे तो सब धान्य सस्ते होवें और रोग कहीं भी न दीखे ॥ ४३ ॥

फाल्गुनस्यह्यमावास्यामस्तंचकुरुतेभृगुः ।
सर्वंचलभतेदीर्घंधान्यस्यनात्रसंशयः ।।४४।।

अर्थ – फाल्गुनको अमावसके दिन शुक्र अस्त होवे तो सब धान्य मँहिगे हो जावें इसमें संदेह नहीं ।। ४४ ।।

मासद्वादशमध्येतुयत्रवर्द्धतिपूर्णिमा ।
तत्रचैवसुभिक्षंचगोधूमघृततंडुलाः ।।४५।।

अर्थ – बारह महीनोंमें कोई महीनेकी पूर्णिमा बढै तो तिस वर्षमें उत्तम सुभिक्ष होवे और गेहूं घृत चावल ये सस्ते होवें ।। ४५ ।।

यदामलिम्लुचेमासेराशिचारगतः शनिः ।
तद्भयंजायतेभूमौवज्रपातेननिश्चयम् ।।४६।।

अर्थ – अधिक मलमासमें जो शनि दूसरी राशिपै चलै तो पृथ्वीपै बिजली गिरनेका भय होवे ।। ४६ ।।

राशौमलिम्लुचेमासेचलतोगुरुमंगलौ ।
अथवामध्यमावृष्टिर्नभसिश्रावणेभवेत् ।।४७।।

इति अर्घप्रकाशे त्रयोदशमासफलम् ।

अर्थ – जो अधिकमासमें बृहस्पति मगल ये अपनी राशिसे दूसरी राशिपै चलें तो श्रावण तथा भाद्रपदमें मध्यम वर्षा होवे ।। ४७ ।।

इति अर्घप्रकाशभाषायां त्रयोदशमासफलम् ।।

अन्यानहंप्रवक्ष्यामिग्रहातिचारवक्रयोः ।
चंद्रसूर्यप्रकाशादिफलं भवतिनिश्चयम् ॥१॥

अर्थ – अब ग्रहका अतिचार अर्थात् राशिसे शीघ्रगति होके चलना वा वक्री होना वा चन्द्रमा तथा सूर्यके मण्डल आदिके प्रकाशका फल आदि सब अन्य योगोंको कहेंगे ॥ १ ॥

क्षितिजोवक्रभूतोपिदुर्भिक्षंचमहद्भयम् ।
आरक्तानिचद्रव्याणिमहर्घाणि भवन्ति हि ॥२॥

अर्थ – मंगल वक्री होवे तब दुर्भिक्ष होवे और पृथ्वीपै महान भय होवे तथा सब प्रकारके लाल द्रव्य वस्तु महिंगे होवें ॥२ ॥

धनुर्मीनेयदाचैवमंगलोवक्रगस्तदा ।
धान्यंघृतंमहर्घंच भयभीताचमेदिनी ॥३॥

अर्थ – धन तथा मीन राशिपै मंगल वक्री होके आवें तव अन्न घृत ये महिंगे होवें और पृथ्वी भयसे युक्त हो जावे ॥ ३ ॥

शुक्रगेहेयदावक्रोजायतेक्षितिनंदनः ।
दुर्भिक्षंदेशभंगंचलोकानांचमहद्भयम् ॥४॥

अर्थ – शुक्रके क्षेत्रमें जो वक्री होके मंगल आ जावे तो दुर्भिक्ष होवे और देशोंका भंग होवे लोकोंको महान् भय होवे ॥ ४ ॥

बुधोवक्रीयदास्याच्चेदिक्ष्वादीनांमहर्घता ।
सुभिक्षंसर्वधान्यानिभविष्यंतिनसंशयः ॥५॥

अर्थ – बुध वक्री होवे तो ईख खांड आदि रस महिंगे होवें और सब धान्य सस्ते होवें इसमें सन्देह नहीं है ॥ ५ ॥

वक्रभूतोयदाजीवःसुभिक्षंभूतलेभवेत् ।
जनभूपालसौख्यंस्यात्समर्घंगोरसंघृतम् ॥६॥

अर्थ – बृहस्पति वक्री होवे तब पृथ्वीपै सुभिक्ष होवे और सब मनुष्य राजोंको सुख होवे गौका दूध घृत आदि रस सस्ते होवें ॥ ६ ॥

मघायांगुरुवक्रीचसुभिक्षंनृपतेःसुखम् ।
पुण्यमार्गंतदागम्यंघृतस्यार्घंप्रदीयते ॥७॥

अर्थ – मघा नक्षत्रपै बृहस्पति वक्री होवे तब सुभिक्ष होवे और राजा को सुख होवे उत्तम मार्गमें सब जन चलैं घृत महिंगा होवे ॥ ७ ॥

आत्मगेहेभवेत्सौरिर्गुरुर्वक्रीप्रजायते ।
धान्यानिसंग्रहेद्यस्तुतस्यलाभश्चतुर्गुणः ॥८॥

अर्थ – शनि अपने क्षेत्रमें होवे तब बृहस्पति वक्री हो जावे उस समय जो अन्नका संग्रह करै उसको चौगुना लाभ होवे ॥ ८ ॥

गदादैत्यगुरुश्चैवराशिवक्रंचरिष्यति ।
धान्यार्घंचक्षयंकुर्याद् घृततैलमहर्घता ॥९॥

अर्थ – जब शुक्र वक्री होवे तब धान्य महिंगे होवें और घृत तेल महिंगे होवें ॥ ९ ॥

वृषेतुलेयदाकर्केवक्रीभूत्वाभृगुःस्थितः ।
पुनर्मार्गेयदायातिसुखीस्यान्नृपतिःप्रजाः ॥१०॥

अर्थ – वृष तुला कर्क इन राशियोंपै वक्री होके स्थित हुआ शुक्र जब अपने मार्गमें आवे तब राजाको और प्रजाको सुख होवे ॥ १० ॥

भरण्यांवक्रगःसौरिरथवाचाश्विनीभवेत् ।
वत्सरेतत्रपीडास्याद्धान्यनाशश्चतुष्पदः ॥११॥

अर्थ – भरणी नक्षत्रपै अथवा अश्विनीपै यदि शनि वक्री होवे तो अन्नका नाश और पशुओंका नाश होवे ।। ११ ।।

मघायांवक्रगः सौरिःश्लेषायांयदिगच्छति ।
गोधूमघृतशालीनांमहर्घंप्रबलंभवेत् ।।१२।।

अर्थ – जब मघा नक्षत्रसे वक्री होके शनैश्चर श्लेषा नक्षत्रपै आवे तब गेहूं घृत चावल ये अत्यन्त महिंगे होवें ।। १२ ।।

कन्यामीनेयदासौरीराशिचक्रेप्रजायते ।
नृपयुद्धंभयंलोकेदुर्भिक्षंतत्रजायते ।।१३।।

अर्थ – कन्या तथा मीन राशिपै शनि आवे तब राजाओंका युद्ध होवे और संसारमें भय होवे दुर्भिक्ष होवे ।। १३ ।।

ज्येष्ठांशनिकृतंवक्रमनुराधांचगच्छति ।
यानिकानिचद्रव्याणिसमस्तार्घंप्रदीयते ।।१४।।

अर्थ – जब ज्येष्ठा नक्षत्रसे वक्री होके अनुराधा नक्षत्रपै शनि आवे तब द्रव्य महिंगे होवें ।। १४ ।।

उत्तरायांकृतेवक्रेपूर्वाषाढेप्रजायते ।
अपूर्वंकुरुतेकालंधनाढ्योबहुपीड्यते ।।१५।।

अर्थ – उत्तराषाढपै वक्री होके जब पूर्वाषाढपै शनि आवै तब दारुण दुर्भिक्ष होवे और धनाढ्य पुरुषोंको बहुतसी पीडा होवे ।। १५ ।।

गुरुसंगेशनिर्वक्रीभवेदात्मगृहेस्फुटम् ।
गोधूमतिलतैलं च नवमासेमहर्घता ।।१६।।

अर्थ – बृहस्पतिके साथ शनि वक्री होवे और अपना क्षेत्रका होवे तब गेहूं तिल तेल ये नव महीनोंतक महिंगे रहैं ।। १६ ।।

यदासौम्यग्रहःकोपिअतिचारोपिजायते ।
दुर्भिक्षंनृपपीडाचशुभंनदृश्यतेक्वचित् ॥१७॥

अर्थ – जब कोई सौम्यग्रह राशिपै अतिचार अर्थात् शीघ्र गति चलै तब दुर्भिक्ष होवे राजाको पीडा होवे कहीं शुभफल नहीं दीखे ॥ १७ ॥

क्रूरग्रहोयदाकोपिह्यतिचारंतुगच्छति ।
सुभिक्षंसर्वधान्येषुसौख्यंसर्वंप्रवर्त्तते ॥१८॥

अर्थ – जब कोई क्रूर ग्रह अतिचार गतिको प्राप्त होवे तब सब धान्य सस्ते होवें और सबको सुख होवे ॥ १८ ॥

अतिचारंगतेसौम्येवक्रीभूतोबृहस्पतिः ।
सुभिक्षंनवखंडेषुराज्यभोगकृतामही ॥१९॥

अर्थ – सौम्यग्रह अतिचार हो रहा हो तब बृहस्पति वक्री होवे तो सब खंडों में सुभिक्ष होवे और पृथ्वीपै उत्तम राज्यका भोग होवे ॥ १९ ॥

यदाक्रूरग्रहोवक्रीह्यतिचारीतुसौम्यकः ।
पीडाव्याधिभयंतत्रदुर्भिक्षंराज्यविग्रहम् ॥२०॥

इति अर्घप्रकाशे वक्रातिचारफलम् ।

अर्थ – जब क्रूर ग्रह वक्री होवे और सौम्य ग्रह अतिचार गतिको प्राप्त होवे तब संसारको पीडा हो दुर्भिक्ष हो राजाओंका युद्ध होवे ॥ २० ॥

इति अर्घप्रकाशहिन्दीटीकायां ग्रहवक्रातिचारफलम् ।

अश्विनीभरणीचैवकृत्तिकायांतथैव च ।
मंडलंदीयतेचंद्रोवाणिज्यंगृह्यतेबुधैः ॥१॥

अर्थ – अश्विनी भरणी कृत्तिका इन नक्षत्रोंके दिन जो चंद्रमा में मंडल होवे अर्थात् कुण्डल होवे तो अन्न संग्रह व्यवहार करना योग्य है ॥ १ ॥

यदापुनर्वसौऋक्षेमंडलंदीयतेशशी ।
पश्चिमोत्तरमाशासुमेघवृष्टिःप्रजायते ॥२॥

अर्थ – पुनर्वसु नक्षत्रके दिन जो चंद्रमामें मंडल होवे तो पश्चिम उत्तर दिशामें मेघ वर्षे ॥ २ ॥

निशापतिर्यदापुष्येमंडलंदीयतेपुनः ।
सर्वत्रवृष्टिर्भवतिद्वितीयेतृतीये दिने ॥३॥

अर्थ – पुष्य नक्षत्रके दिन जो चंद्रमामें मंडल होवे तो दूसरे तीसरे दिन सर्वत्र वर्षा होवे ॥ ३ ॥

चित्रायामथवास्वातौनिशापतिर्यदाभवेत् ।
प्रकाशंकुरुतेभानुर्मेघवृष्टिस्तथोच्यते ॥४॥

अर्थ – चित्रा अथवा स्वाती नक्षत्रपै चंद्रमा होवे तब सूर्य अच्छी तरह प्रकाश करै और मेघकी वर्षा होवे ॥ ४ ॥

उत्तराहस्तचित्रायांस्वातौचैवविशेषतः ।
मंडलंदीयतेचंद्रोवृष्टिस्तत्रभवेद्ध्रुवम् ॥५॥

अर्थ – उत्तराफाल्गुनी हस्त चित्रा स्वाती इन नक्षत्रोंके दिन चंद्रमामें मण्डल होवे तो अवश्य वर्षा होवे ॥ ५ ॥

मीनसंक्रांतिकालेचपौष्णभोगैर्भवेद्दिनम् ।
यत्रबिंदुर्भवेन्मात्रतत्रगार्भंभवेद्ध्रुवम् ॥६॥

इति चंद्रपरिवेषःसमाप्तिमगमत्

अर्थ – मीनकी संक्रांतिके समय में जबतक रेवती नक्षत्रपै सूर्य रहे तबतक बिंदुमात्र भी जल नहीं वर्षे वह गर्भ कहाता है वर्षाकालमें उत्तम है ॥ ६ ॥

इत्यर्घप्रकाशहिन्दीटीकायां चंद्रपरिवेषफलम्

कृत्तिकांभरणींचैवयदितिष्ठेद्वृहस्पतिः ।
मध्यमाजायतेवृष्टिःसस्यं भवतिमध्यमम् ।। १ ।।

अर्थ – कृत्तिका भरणी इन नक्षत्रोंपै वृहस्पति स्थित होवे तव वर्षा मध्यम होवे और खेती भी मध्यम निपजे ।। १ ।।

आर्द्रायांमृगशीर्षेचयदियातिवृहस्पतिः ।
क्षेमंभवतिह्यारोग्यंसर्वत्रजायतेसुखम् ।। २ ।।

अर्थ – मृगशिर आर्द्रा इन नक्षत्रों पै वृहस्पति होवे तव सव जगह क्षेम कुशल होवे और प्रजामें सुख होवे । २ ।।

पुनर्वसौतथापुष्येश्लेषायांगच्छतेगुरुः ।
स्वल्पवृष्टिर्भवेत्तत्रदुर्भिक्षंचविनिर्विशेत् ।। ३ ।।

अर्थ – पुनर्वसु पुष्य आश्लेषा इन नक्षत्रोंपै वृहस्पति होवे तव थोडी वर्षा होवे और दुर्भिक्ष होवें ।। ३ ।।

मघायांपूर्वफाल्गुन्यांयदियातिवृहस्पतिः ।
क्षेमंसुभिक्षमारोग्यंसृवृष्टिश्चैवजायते ।। ४ ।।

अर्थ – मघा तथा पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्रपै वृहस्पति स्थित होवे तव प्रजामें क्षेमकुशल होवे और उत्तम वर्षा होवे ।। ४ ।।

उत्तराफाल्गुनीहस्तेदेवाचार्योयदाभवेत् ।
क्षेमं भवतिचारोग्यंसुवृष्टिश्चप्रजायते ।। ५ ।।

अर्थ – उत्तराफाल्गुनी वा हस्त नक्षत्रपै वृहस्पति होवे तव क्षेम कुशल आरोग्यसे संयुक्त प्रजा रहैं उत्तम वर्षा होवे ।। ५ ।।

चित्रायांचैवस्वातौचयविर्तिष्ठेद्बृहस्पतिः ।
विचित्रंवर्षतेदेवोविचित्रास्सस्यसंपदः ।। ६ ।।

अर्थ – चित्रा तथा स्वाती नक्षत्रपै बृहस्पति होवे तव उत्तम वर्षा होवे और उत्तम खेतियां निपजें ।। ६ ।।

विशाखांचानुराधायांयदागच्छतिवैगुरुः ।
मध्यमाजायतेवृष्टिःसस्यंभवतिमध्यमम् ।। ७ ।।

अर्थ – विशाखा वा अनुराधा नक्षत्रपै बृहस्पति होवे तब मध्यम वर्षा होवे और मध्यम खेती निपजे ।। ७ ।।

ज्येष्ठामूलेचनक्षत्रेगच्छतेनिर्जरोगुरुः ।
द्विमासंवर्षतेदेवःकन्यायांनैववर्षति ।। ८ ।।

अर्थ – ज्येष्ठा तथा मूल नक्षत्रपै निर्जर अर्थात् उदार पूर्ण बल सहित बृहस्पति वर्षाकालमें होवे तो दो महीने वर्षा होवे और कन्याकी संक्रांतिमें नहीं वर्षे ।। ८ ।।

पूर्वावाउत्तराषाढांयदागच्छतिवाक्पतिः ।
त्रिमासंवर्षतेदेवोमासमेकंनवर्षति ।। ९ ।।

अर्थ – पूर्वाषाढा वा उत्तराषाढापै बृहस्पति होवे तो तीन महीनोंतक वर्षा होवे और एक महीना नहीं वर्षे ।। ९ ।।

श्रवणेचधनिष्ठायांशतभिषायांयदागुरुः ।
क्षेमंकुशलमारोग्यंसुभिक्षंचविनिर्दिशेत् ।। १० ।।

अर्थ – श्रवण धनिष्ठा शतभिषा इन नक्षत्रोंपै बृहस्पति होवे तो क्षेम कुशल आरोग्य रहै और सुभिक्ष रहै ।। १० ।।

पूर्वाचोत्तरभाद्रे च यदियातिबृहस्पतिः ।
अनावृष्टिर्भयंघोरंदुर्भिक्षंतत्रजायते ।। ११ ।।

अर्थ – पूर्वाभाद्रपदा तथा उत्तराभाद्रपदापै बृहस्पति होवे तो वर्षा नहीं होवे भय और घोर दुर्भिक्ष होवे ॥ ११ ॥

रेवत्यांमीनराशौचेद्यदितिष्ठेद्बृहस्पतिः ।
सुभिक्षंक्षेममारोग्यंतदासस्यवतीमही ॥ १२ ॥

इति गुरुनक्षत्रचारः समाप्तः

अर्थ – मीन राशिपै होके रेवती नक्षत्रपै बृहस्पति स्थित होवे तो सुभिक्ष ह वे, संसारमें कुशल होवे और आरोग्य होवे, पृथ्वीपै सब प्रकारकी खेतियां उत्पन्न होवें ॥ १२ ॥

इति गुरुनक्षत्रचारफलं समाप्तम्

संक्रांतिरादित्यदिने नशस्ताकरोतियुद्धं नृपतेरतीव । धान्यं
महर्घंप्रतिरौद्रवार्ताप्रजाभवेद्दुःखितहीनदीना ॥ १ ॥

अर्थ – आदित्यवारके दिन संक्रांति आवे तब श्रेष्ठ नहीं है राजाओं का अत्यन्त युद्ध होवे और धान्य महँगे होवें, संसारमें भय होवे प्रजा दुःखितदीन हो जावे ॥ १ ॥

प्रवालमुक्ताधनधान्यसंकुलाप्रजासुखं नंदतिसर्वदाजनः ॥
सर्वंसमर्घंभवतीहधान्यंकरोतिचंद्रेरविसंक्रमश्चेत् ॥ २ ॥

अर्थ – सोमवारके दिन संक्रांति आवे तब मूंगा मोती सब प्रकारके धान्य ये सस्ते होवे और पृथ्वीपै सुख होवे सब जनोंको आनंद होवे ॥ २ ॥

भौमस्यवारेयदिसंक्रमश्चकरोतिपृथ्व्यामसुखं महर्घता ।
क्षाररसंवैघृततैलसंयुतंकर्पूरकस्यैवमहर्घता च ॥ ३ ॥

अर्थ – मंगलवारके दिन सूर्यकी संक्रांति होवे तब पृथ्वीपै पीडा होवे सब वस्तु महँगी होवें, रस नमक घृत तेल कपूर ये सब वस्तु महँगे होवें ॥ ३ ॥

बुधस्यवारेयदिसंक्रमश्चेत्समानवस्तूनिभवेच्चधान्यम् ।
असौख्यलोकाभयभीतपीडासुवृष्टिकालेषुचमंदवर्षा ॥ ४ ॥

अर्थ – बुधवारके दिन सूर्यकी संक्रांति होवे तब अनेक प्रकारकी वस्तु सब धान्य का समान भाव रहे लोगोंको पीडा भय होवे और वर्षाकालमें मंद २ वर्षा होवे ॥ ४ ॥

गुरोश्चवारेयदिसंक्रमश्चेत्समानवस्तूनि भवंति नित्यशः ।
पृथ्वीसदानंदतिधर्मकर्मणाभवेच्चभूमिः प्रचुरान्नपूर्णा ॥ ५ ॥

अर्थ – बृहस्पतिवारके दिन संक्रांति होवे तो सब वस्तुओंका समानभाव रहै और पृथ्वीपै धर्म कर्मका आचरण होनेसे सब प्रजाको आनंद होवे और पृथ्वी बहुत अन्नसे पूर्ण हो जावे ॥ ५ ॥

शुक्रस्यवारेरविसंक्रमश्चेत्समर्घतांयातितदा च धान्यम् ।
निर्मौल्यअश्वाश्चगजाश्च उष्ट्रागतार्थमोलंगुडमर्घतांच ॥ ६ ॥

अर्थ – शुक्रवारके दिन संक्रांति होवे तब सब धान्य महँगे होवें और घोडे हस्ती ऊंट ये मोलसे रहित होवें अर्थात् सस्ते होवें तेल सस्ता होवे गुड महँगा होवे ॥ ६ ॥

सौरेश्चवारेरविसंक्रमश्चेद्दुर्भिक्षमायातिचसर्वधान्यम् ।
पृथ्वीसरोगानृपतेः प्रजासुभवेन्महायुद्धभयंतदानीम् ॥ ७ ॥

अर्थ – शनिवारके दिन संक्रांति होवे तब सब धान्य महँगे होवें पृथ्वीपै रोग होवे और राजाके मनुष्योंमें अत्यन्त भयंकर युद्ध होवे ॥ ७ ॥

कृष्णेवृद्धिःक्षयंशुक्लेमंदार्ककुजसंक्रमः।
अनावृष्टिगतामेघाःपरचक्रंविनिर्दिशेत् ।। ८ ।।

अर्थ – कृष्णपक्षमें तिथि बढै और शुक्लपक्षमें तिथि टूटी होवे अथवा शनि सूर्य मंगल इन वारोंके दिन संक्रांति होवे तो वर्षा नहीं होवे और राज्यभंग होवे ।। ८ ।।

एतदर्घप्रकाशस्यभाषाटीकानुवादिता ।
रविदत्तेनवैद्येनवेरीपुरनिवासिना ।। ९ ।।

इति वेरीनिवासिवैद्यरविदत्तशास्त्रिविरचिता अर्घप्रकाशहिन्दीटीका समाप्ता ।

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५,
फैक्स -०२०-२६८७४९०७.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१
दूरभाष/फैक्स- ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान :

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५,
फैक्स -०२०-२६८७४९०७.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१
दूरभाष/फैक्स- ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS